Philosophy 2nd year

PAGE 9n ter
DATE

Ch-5

लोक संग्रह

Q.1 लोकसंग्रह से आप क्या समझते हैं? सविस्तार चर्चा कीजिए।

Or

गीता के 'लोकसंग्रह' सिद्धांत की व्याख्या करें।

Describe the Lokasangraha Theory of the Gita.

Ans. लोकसंग्रह का तात्पर्य लोक कल्याण है। सभी व्यक्तियों के हित में कर्म करना लोक संग्रह है। इस संसार में रहने वाले व्यक्तियों का कल्याण ही 'लोक संग्रह' कहलाता है। लोक संग्रह का साधन निष्काम कर्म है, निष्काम कर्म के बिना लोकसंग्रह असंभव है। अच्छा कर्म करने से ही लोक संग्रह होता है।

लोक संग्रह नैतिक निर्णय का मानदण्ड है। लोकसंग्रह सभी व्यक्तियों के जीवन को सुखमय बनाने की प्रेरणा देता है। इसे ~~लो~~ सर्वकल्याणवाद की संज्ञा दी जा सकती है।

—X—

Q.2 लोक संग्रह की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

Ans. स्वार्थ से ही सभी प्रकार की विपत्तियाँ और विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं। सभी प्रयास स्वार्थ-सिद्धि के लिए नहीं होते। स्वार्थ से कर्म होता और बंधनयुक्त हो जाता है। मानव के लिए मुक्ति पाना उसका मुख्य लक्ष्य है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसे बंधन तोड़ने पड़ते हैं तब जाकर उसे परम आनंद अर्थात् मुक्ति मिलता है तथा लक्ष्य की

PAGE
DATE

प्राप्ति के लिए स्वकर्म की आवश्यता नहीं होती बल्कि लोक सेवा की आवश्यता होती है। हमारे पास जितनी समझ, सत्य, सामर्थ्य और सामग्री है उसी से हम दूसरों की सेवा करते हैं तो वह सेवा लोक हितकारी होगी। इसी बात को ध्यान में रखकर गीता में लोकसंग्रह का वर्णन किया गया है।

गीता में व्यावहारिक नैतिकता के स्तर में लोकसंग्रह को अर्थात् सामाजिक कल्याण को परम पुरुषार्थ माना है। गीता में यह स्पष्ट मान्यता है कि आसक्ति रहित होकर लोकसंग्रह को ध्यान में रखकर किए गए कर्म से ही व्यक्ति संसिद्धि प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner